|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| 16. Juni 2022 | | | |
| **Fronleichnam C** | | | |
| Erste Lesung: Gen 14,18-20; Zweite Lesung: 1 Kor 11,23-26; Evangelium: Lk 9,11b-17 | | | |
|  |  | |  |
| Eröffnung: | GL 805, 1+2+4 | | Kommt her, ihr Kreaturen all |
|  | GL 808, 1+2 | | Deinem Heiland |
|  | GL 477, 1+2 | | Gott ruft sein Volk zusammen |
|  |  | | |
| Kyrie: | Rufe (Melodie GL 163) | | Herr, erbarme dich |
|  | Herr Jesus, du Priester des Neuen Bundes. | | |
|  | Du schenkst uns durch deinen Tod das Leben: | | |
|  | Du gibst uns dein Fleisch und dein Blut zur Speise. | | |
|  | Du rufst uns alle zu deinem Opfermahl. | | |
|  | Herr Jesus, du bist der Diener aller. | | |
|  | Du bist unser Herr und Meister. | | |
|  |  | | |
| Gloria: | GL 714 | | Ehre dir, Gott |
|  |  | |  |
| Antwortgesang: | Psalm 110, 1-5 | |  |
|  | Kehrvers: GL 59, 1 | | Du bist Priester auf ewig |
|  | oder Sequenz: | |  |
|  | GL 808, 1-5 | | Deinem Heiland |
|  |  | |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 3 | |  |
|  | Vers: | |  |
|  | *So spricht der Herr:* | | |
|  | *Ich bin das lebendige Brot,* | | |
|  | *das vom Himmel gekommen ist.* | | |
|  | *Wer dieses Brot isst, wird in Ewigkeit leben.* | | |
|  |  |  | |
| Credo: | GL 794 | Wir glauben, Herr | |
|  |  |  | |
| Gabenbereitung: | GL 184 | Herr, wir bringen in Brot und Wein | |
|  | GL 282, 1-4 | Beim letzten Abendmahle | |
|  |  |  | |
| Sanctus: | GL 708 | Heilig | |
|  |  |  | |
| Agnus Dei: | GL 498, 1+2 | Das Heil der Welt | |
|  | GL 497, 1-3 | Gottheit, tief verborgen | |
|  |  |  | |
| Danksagung: | GL 209 | Du teilst es aus | |
|  | GL 213 | O heilge Seelenspeise | |
|  | GL 215, 1+2 | Gott sei gelobet | |
|  | GL281 | Also sprach beim Abendmahle | |
|  |  |  | |
| Schluss: | GL 807 | Lasst, Christen, hoch | |